जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक : क्रमांक 128
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी दिनांक 01.10.2015

जनेकृविवि ने 100 से अधिक फसलों की 400 उन्नत किस्में विकसित की – कृषि मंत्री बिसेन
पूर्ण गरिमा और उल्लासमय वातावरण में मनाया गया 52वॉ स्थापना दिवस
कृषक वैज्ञानिक हुये सम्मानित : होशंगाबाद में नये कृषि महाविद्यालय की घोषणा
पेंशन हेतु सरकार देगी भरपूर राशि : एक दर्जन कृषि पुस्तकों का हुआ विमोचन
अर्न्तराष्ट्रीय छात्रावास एवं जैविक कृषि के लिये 'अनुभव सीख कार्यक्रम' भवन लोकार्पित
बीज प्रदर्शनी उदघाटित : कृषि विश्वविद्यालयों में नये व्यवसायिक कोर्स जुड़ेगे

जबलपुर 01 अक्टूबर। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय में आज पूर्ण गरिमा और उल्लासमय वातावरण में 52वॉ स्थापना दिवस और राष्ट्रीय बीज दिवस मनाया गया। इस ऐतिहासिक मौके पर मुख्य अतिथि मंत्री, किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग, म.प्र. शासन श्री गौरीशंकर बिसेन ने नवनिर्मित अर्न्तराष्ट्रीय छात्रावास एवं जैविक कृषि के लिये 'अनुभव सीख कार्यक्रम' भवन का लोकार्पण किया वहीं प्रजनक बीज उत्पादन इकाई में बीज प्रदर्शनी का उदघाटन भी किया। श्री बिसेन ने मुख्य अतिथि की आसंदी से कहा कि अपने 52 वर्ष के सुनहरे सफर में जनेकृविवि ने 100 से अधिक फसलों की 400 उन्नत किस्में विकसित कर कृषि, कृषक और देश की कृषि में बहुत बड़ा और एतिहासिक योगदान दिया है। यह प्रदेश और कृषि वैज्ञानिकों की बड़ी उपलब्धि है। देश के जैविक उत्पादन में प्रदेश का 40 तथा अनाजोत्पादन में 12 प्रतिशत योगदान है। जलवायु परिवर्तन, अल्पवर्षा और खंडित वर्षा एक बड़ा चुनौती है। इसके अनुरूप नवीन कृषि अनुसंधान की जरूरत है। श्री बिसेन ने कृषि विश्वविद्यालय के लगभग दो दर्जन वैज्ञानिकों द्वारा रचित एक दर्जन कृषि पुस्तकों एवं कृषि साहित्य का विमोचन करते हुये चुटकी ली कि जीवन में इतनी बड़ी मात्रा में पुस्तकों का विमोचन होते मैंने कहीं नहीं देखा। इस मौके पर कृषि मंत्री श्री बिसेन ने प्रगतिशील कृषक सर्वश्री जियालाल राहंगडाले बालाघाट, दशरथ कुशवाहा नरसिंहपुर तथा अयोध्या प्रसाद भोयल सिवनी को वर्ष के सर्वश्रेष्ठ कृषक पुरूस्कार के साथ ही जनेकृविवि के अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध अनुसंधानकर्ता एवं सेवानिवृत्त कृषि वैज्ञानिक डॉ. जी.पी. वर्मा एवं डॉ. एस.के. मेहता को शाल, श्रीफल और स्मृतिचिन्ह प्रदान कर लाईफटाईम अचीवमेन्ट अवार्ड से सम्मानित किया गया। कृषि मंत्री ने पवारखेड़ा होशंगाबाद में नये 6वें कृषि महाविद्यालय खोलने की घोषणा करते हुये पेंशन हेतु धन की कमी पूरा करने का आश्वासन दिया। इससे पूरा सभागार करतल तालियों से गूंज उठा। अपने अध्यक्षीय उदबोधन में कुलपति प्रो. विजय सिंह तोमर ने कहा देश के 92 प्रतिशत हिस्से में जनेकृविवि द्वारा विकसित प्रजातियां उगाई जा रही हैं। दुनिया में सबसे पहले हमने रंगीन कपास पैदा किया। देश से मध्यप्रदेश का 35 प्रतिशत गेहूं निर्यात हो रहा है। समूचे विश्व में हमारी सोयाबीन तथा धान की हायब्रीड किस्में जानी जाती हैं। प्रो. तोमर ने सेवानिवृत्ति से विवि में लगातार घट रहे वैज्ञानिक, शिक्षक और कर्मचारियों की संख्या पर चिन्ता से कृषि मंत्री का अवगत कराया।

समारोह के विशिष्ट अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के उपमहानिदेशक (कृषि शिक्षा) एवं कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर के पूर्व कुलपति डॉ. एन.एस. राठौर ने कहा कि भा. कृ.अ.प. कृषि विश्वविद्यालयों में नये महिला छात्रावास हेतु प्राथमिकता से

भरपूर सहयोग देगी। छात्रों हेतु उद्योग और व्यवसाय के मापदंड़ों के अनुसार कृषि शिक्षा में नये कृषि विषय का समावेश किया जायेगा ताकि छात्रगण स्वयं का उद्योग विकसित कर रोजगार दे सकें। उन्होंने आगे कहा कि देश में विश्व की 2.4 प्रतिशत जमीन, 4 प्रतिशत पानी, 17 प्रतिशत जनसंख्या तथा 11 प्रतिशत जानवर हैं। हमारा 80 प्रतिशत पानी खेती में खर्च हो जाता है। लगातार बढ़ती जनसंख्या भविष्य में बड़ी समस्या का रूप लेगी जिस हेतु खाद्यान्न उगाना बहुत कठिन होगा। देश के प्राकृतिक स्त्रोंतों का हमें पूर्ण लाभ उठाना होगा। मनरेगा और खेती से जोड़ा जायेगा और केन्द सरकार कृषि हेतु स्पेशन सबसिडी पैकेज देगी। इस अवसर पर कुलपति प्रो. विजय सिंह तोमर, कार्यक्रम संयोजक कुलसचिव राजेश पालीवाल व अधिष्ठाता कृषि संकाय एवं संचालक अनुसंधान डॉ. एस. कोटेश्वर राव ने मंचासीन अथिति मंत्री श्री गौरीशंकर बिसेन, उपमहानिदेशक (कृषि शिक्षा) डॉ. एन.एस. राठौर, कलेक्टर श्री एस. एन. रूपला, मेडिकल विवि कुलपति डॉ. डी.पी. लोकवानी, वेटनरी विवि कुलपति डॉ. एस.एन. एस. परमार, खरपतवार निदेशालय निदेशक डॉ. शर्मा, प्रमंडल सदस्य सुभाष भाटिया, डॉ. अविनाश खत्री, अश्विनी सिंह चौहान उज्जैन आदि को शाल, श्रीफल एवं प्रतीक चिन्ह भेंट कर भावभीना अभिनन्दन किया। पूर्व में सस्वर सरस्वती पूजन वंदन से समारोह का शंखनाद हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अमित शर्मा एवं आभार प्रदर्शन अधिष्ठाता डॉ. (श्रीमति) ओम गुप्ता ने किया।

आकर्षक और ज्ञानवर्धक कृषि प्रदर्शनी में प्रदर्शित कडकनाथ मुर्गा, गौमूत्र सिरप, जिमीकन्द, सीताफल, मुसंमी, कलात्मक वस्त्र, सब्जियां, फल, खाद, बीज, मोटा अनाज, कृषि यंत्र, अरबी, सूरन, औषधीय युक्त खाद्य उत्पाद, दर्द निवारक तेल, इत्र एवं क्रीम इत्यादि चर्चा में रहे।

—000—

जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक :
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक 129
दिनांक 02.10.2015

कृषि वि.वि. में कुलपति ने झाड़ू लगाकर की स्वच्छता अभियान की शुरूआत

जबलपुर, 02 अक्टूबर। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय में कुलपति प्रो. विजय सिंह तोमर ने झाड़ू लगाकर स्वच्छता अभियान की शुरूआत की। इनके साथ अधिष्ठाता कृषि संकाय एवं संचालक अनुसंधान सेवाएं डॉ. एस.के. राव, कुलसचिव श्री राजेश पालीवाल, संचालक विस्तार डॉ. पी.के. मिश्रा, संचालक शिक्षण डॉ. जी.एस. राजपूत, संचालक प्रक्षेत्र डॉ. डी.के. मिश्रा, अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय डॉ. (श्रीमति) ओम गुप्ता, अधिष्ठाता कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय डॉ. आर.के. नेमा, लेखानियंत्रक श्रीमति सुशीला गुप्ता, कार्यपालन यंत्री इंजी. पी.के. सिंह कृषि वैज्ञानिक, शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी तथा राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्र छात्राओं ने भी झाड़ू लगाकर लगातार 2 घन्टे तक विश्वविद्यालय परिसर, कृषि महाविद्यालय, कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय, छात्रावास, टीचर्स हास्टल सहित लगभग 2 कि.मी. क्षेत्र की निरन्तर सफाई कर स्वच्छता अभियान को सार्थक बनाया। इसके पूर्व कुलपति ने शपथ ग्रहण करवाई। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार प्रदर्शन अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. व्ही.के. प्यासी ने किया।

—000—

जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक :
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक 130
दिनांक 06.10.2015

मध्यप्रदेश में दोगुना हुआ सरसों का उत्पादन
किसानों के लिये फायदेमंद हो सकती है इस वर्ष सरसों की बुवाई
4100 रूपये तक मिल सकते हैं दाम

जबलपुर 06 अक्टूबर। भारत सरसों का उत्पादन करने वाला प्रमुख देश है। विश्व में इसका कुल रकबे में प्रथम तथा कुल उत्पादन में द्वितीय स्थान है। विश्व के कुल सरसों के रकबे का लगभग एक चौथाई तथा कुल उत्पादन का 11 प्रतिशत उत्पादन भारत में होता है। यदपि देश में सरसों की उत्पादकता अन्य राष्ट्रों से अपेक्षाकृत कम है। देश में राजस्थान, हरियाणा, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल तथा गुजरात प्रमुख सरसों उत्पादित राज्य हैं।

देश में सरसों के उत्पादन तथा रकबे में मध्यप्रदेश का स्थान राजस्थान एवं हरियाणा के पश्चात् तृतीय है। वर्ष 2013–14 में मध्यप्रदेश में सरसों का रकबा 762 हजार हेक्टेयर तथा उत्पादन 753 हजार टन एवं औसत उत्पादता 989 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी। भिंड, मुरैना, ग्वालियर, श्योपुर, शिवपुरी एवं मंदसौर के आदि मध्यप्रदेश के प्रमुख सरसों उत्पादन करने वाले जिले हैं तथा इन जिलों में सरसों का रकबा भी सबसे अधिक है। मध्यप्रदेश में सरसों का सबसे अधिक रकबा एवं उत्पादन भिंड जिले में होता है। इस जिले में वर्ष 2013–14 में सरसों का रकबा 180 हजार हेक्टेयर एवं उत्पादन लगभग 176 हजार टन हुआ है। देश में उत्पादित कुल सरसों बीज का दसवां भाग का उत्पादन अकेले मध्यप्रदेश में होता है। विगत एक दशक में सरसों का उत्पादन लगभग दो गुना (36 मिलियन टन से बढ़कर 70 मिलियन टन) हो गया है। मध्यप्रदेश में सरसों की कटाई मार्च में होती है।

कृषि अर्थशास्त्र एवं प्रक्षेत्र प्रबंध विभाग, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय की ''बाजार असूचना (मार्केट इंटेलीजेन्स)'' नामक परियोजना ने जनवरी 2003 से अगस्त 2015 तक मुरैना की मण्डियों से सरसों की मॉडल कीमतों को विभिन्न स्त्रोतों से एकत्र कर अर्थमितीय तकनीकों आर्च, गार्च एवं एरिमा से कीमतों का पूर्वानुमान लगाया है कि मार्च माह में सरसों की कीमत प्रति क्विंटल से 4100 रूपये प्रति क्विंटल के मध्य रहने का संभावना है, जो भारत सरकार द्वारा वर्ष 2014–15 हेतु घोषित किये गए न्यूनतम समर्थन मूल्य रूपये 3100 प्रति क्विंटल से काफी अधिक है। अतः कृषकों को सरसों की अधिकाधिक क्षेत्र में बुवाई करने की सलाह दी जाती है।

–000–

जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक :
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक 131
दिनांक 08.10.2015

कृषि महाविद्यालय में महात्मा गांधी के विचारों पर व्याख्यान माला सम्पन्न

जबलपुर 08 अक्टूबर। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय स्थित कृषि महाविद्यालय जबलपुर में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के 147वीं जयन्ती के अवसर पर के छात्र–छात्राओं हेतु ''वर्तमान परिदृश्य में महात्मा गांधी के विचारों की सार्थकता'' विषय पर व्याख्यान माला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें महाविद्यालय के विवेकानन्द सभागार में स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पी.एच.डी. के छात्र–छात्राओं ने हिस्सा लेकर वर्तमान परिदृश्य में महात्मा गांधी के विचारों पर गहन चिन्तन अपने व्याख्यान में प्रस्तुत कर गांधीजी के आदर्शो, उनकी शालीनता, सत्य अहिंसा की भावना, स्वच्छता, नशा मुक्ति, भ्रूण हत्या व आतंकवाद सहित समाज में विद्यमान अपने मुद्दों पर अपने विचार स्पष्टता के साथ रखे। प्रतियोगिता का मूल्यांक कृषि महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. एस.के. अग्रवाल, डॉ. एम.के. दुबे, डॉ. एस. के. पाण्डे, डॉ. आर.के. समैया एवं सेवानिवृत्त प्राध्यापक डॉ. एच.एस. यादव द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कृषि महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. (श्रीमति) ओम गुप्ता, अध्यक्ष जनेकृविवि के अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. व्ही.के. प्यासी तथा विशिष्ट अतिथि कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. आर.के. नेमा ने इस प्रतियोगिता में छात्र–छात्राओं का उत्साहवर्धन किया तथा 21वीं सदी में गांधीजी के विचारों को अपने जीवन में समाहित करने की बात कही और उनके सपनों को साकार करने हेतु तन, मन व धन की स्वच्छता पर अमल करने का संदेश दिया। कार्यक्रम का संचालन सांस्कृतिक समन्वयक डॉ. अमित शर्मा एवं आभार एन.एस.एस. प्रभारी डॉ. डी.के. सिंह ने किया। इस अवसर पर छात्र–छात्राओं की उपस्थिति भी सराहनीय रही।

–000–

जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक :
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक 132
दिनांक 13.10.2015

कृषि विश्वविद्यालय तैयार करेगा जैव उर्वरक उद्यमी

जबलपुर 13 अक्टूबर। जैव उर्वरक के क्षेत्र में व्यापार की अपार संभावनाओं के मद्देनजर जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय की बिजनेस प्लानिंग एण्ड डवलपमेन्ट यूनिट जैव उर्वरक उद्योग स्थापित करने का प्रशिक्षण देकर उद्यमी तैयार करेगा। इक्छुकजन 15 दिनी प्रशिक्षण हेतु बिजनेस प्लानिंग एण्ड डवलपमेन्ट यूनिट में नामांकन करा सकते हैं तथा विश्वविद्यालय की बेवसाईट www.jnkvv.nic.in पर पूर्ण जानकारी उपलब्ध है।

जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक :
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक 132
दिनांक 13.10.2015

मध्यप्रदेश में 5 वर्षो में 22 प्रतिशत बढ़ा मक्के का उत्पादन
कृषकों को इस वर्ष 1400 रू. प्रति क्वि. तक मूल्य मिलने का अनुमान

जबलपुर 13 अक्टूबर। मक्का विश्व की महत्वपूर्ण अनाज फसल है जो विकासशील देशों को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है। भारत में मक्का गेहूँ एवं धान के पश्चात् तीसरी सबसे महत्वपूर्ण फसल के रूप में उभर रही है। इसका उपयोग केवल मानवीय भोजन एवं पशु चारा के लिय ही नहीं अपितु मक्का स्टार्च उद्योग, तेल उत्पादन, बेबीकॉन आदि के लिये भी व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है। मक्के का उत्पादन वर्ष 2000 के पूर्व 12 मिलियन टन था जो वर्ष 2013–14 में बढ़कर दोगुना अर्थात 23 मिलियन टन हो गया है। हालांकि कुल उत्पादन में प्रमुख स्थान होने के बावजूद भारत में मक्के की उत्पादकता अन्य प्रमुख मक्का उत्पादक देशों की तुलना में अपेक्षाकृत कम है। अतः हमें केवल उत्पादन एवं उत्पादकता पर ध्यान केन्द्रित ना करते हुए आपूर्ति श्रंखला एवं कीमतों का सामयिक प्रचार–प्रसार पर भी ध्यान देने की अतिआवश्यकता है, जिससे कृषकों को समय–समय पर विभिन्न फसलों की कीमतों की जानकारी से अवगत कराया जा सके।

मध्यप्रदेश का भारत में मक्के के कुल उत्पादन में छठवॉ स्थान है तथा उत्पादकता की दृष्टि से प्रदेश राष्ट्रीय औसत स्तर से काफी पिछड़ा हुआ है। पिछले पॉच वर्ष में मक्के के उत्पादन में 22 प्रतिशत की वृद्धि देखी गयी है। प्रदेश में छिन्दवाडा, धार, झाबुआ, रतलाम एवं बैतुल प्रमुख मक्का उत्पादन जिले हैं जिनका प्रदेश के कुल मक्का उत्पादन में दो तिहाई से अधिक योगदान है। उपरोक्त जिलों में से छिन्दवाडा जिले में मक्के का उत्पादन सबसे अधिक है। प्रदेश के सभी जिलों में खरीफ ऋतु में मक्का की बुवाई 15 जून से जुलाई के मध्य तथा कटाई अक्टूबर माह में की जाती है। मध्यप्रदेश की मंडियों में मक्का उत्पाद की अधिकतम आवक अक्टूबर से दिसम्बर माह में रहती है। मक्का की कीमत दवा उद्योग, मुर्गीपालन उद्योगों में दाने की मांग तथा वर्षा कारक मक्का का उत्पादन तथा आवक आदि पर निर्भर करती है।

वर्ष जनवरी 2003 से मई 2015 तक की मक्का मॉडल कीमतों को विभिन्न माध्यमों से एकत्रित किया गया तथा सेस सॉफ्टवेयर की आर्च, गार्च तथा एरिमा अर्थमिति तकनीकों के द्वारा विश्लेषित कर पूर्वानुमानित कीमतों का अनुमान लगाया गया जिसके फलस्वरूप अक्टूबर से दिसम्बर माह के मध्य मक्के की पूर्वानुमानित कीमत 1200 रूपये प्रति क्वि. से 1200 रूपये प्रति क्वि. से 1400 रूपये प्रति क्वि. अनुमानित की गयी, जो न्यूनतम समर्थन मूल्य जो कि 1325 रूपये प्रति क्वि. के लगभग समान है। अतः कृषक अपनी फसल को कटाई के तुरन्त पश्चात् अथवा कुछ समय संग्रहित करने के पश्चात् भी बेचकर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक :
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक 132
दिनांक 13.10.2015

मक्का की कीमत 12 से 14 सौ रहने का पूर्वानुमान

जबलपुर 13 अक्टूबर। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के कृषि अर्थशास्त्र एवं प्रक्षेत्र प्रबंध विभाग की ''बाजार असूचना (मार्केट इंटेलीजेन्स)'' परियोजना के पूर्वानुमान के अनुसार अक्टूबर से दिसम्बर माह के मध्य मक्के की कीमत 1200 रूपये प्रति क्वि. से 1400 रूपये प्रति क्वि. अनुमानित की गयी, जो न्यूनतम समर्थन मूल्य 1325 रूपये प्रति क्वि. के लगभग समान है। अतः कृषक कटाई के तुरन्त पश्चात् अथवा कुछ समय संग्रहित करने के पश्चात् भी फसल बेचकर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक :
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक 134
दिनांक 19.10.2015

सोयाबीन की लाभदायक कीमत मिलने की संभावना

जबलपुर 19 अक्टूबर। सोयाबीन विश्व की प्रमुख तिलहनी फसलों में से एक है। प्रसंस्कृत सोयाबीन विश्व का सबसे बड़ा पशुओं को दिया जाने वाले प्रोटीन का स्त्रोत और दूसरा सबसे बड़ा वानस्पतिक तेल का स्त्रोत है। सोयाबीन में 40% प्रोटीन तथा 20% तेल की मात्रा पायी जाती है। सोयाबीन का उत्पति केन्द्र चीन है। संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व में सोयाबीन का सबसे बड़ा उत्पादक एवं निर्यातक देश है। संयुक्त राज्य अमेरिका में कुल तिलहन उत्पादन में अकेले सोयाबीन का योगदान 90% है। भारत विश्व का पाचवां सबसे बड़ा सोयाबीन का उत्पादक एवं निर्यातक देश है। वर्ष 2014–15 की तुलना में 0.16 मिलियन टन से कम था। मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, आंधप्रदेश, कर्नाटक, छत्तीसगढ़ एवं गुजरात देश के प्रमुख सोयाबीन उत्पादक राज्य है।

मध्यप्रदेश को भारत का ''सोयाबीन प्रदेश'' के रूप में भी जाना जाता है तथा राज्य को सोयाबीन के रकबा एवं उत्पादन में प्रथम स्थान प्राप्त है। वर्ष 2013–14 में सोयाबीन का रकबा, उत्पादन एवं उत्पादकता क्रमशः 63.80 लाख हेक्टेयर, 50.00 लाख टन एवं 784 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी जबकि 2014–15 में सोयाबीन का रकबा, उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़कर क्रमशः 65 लाख हेक्टेयर, 94.25 लाख टन एवं 1450 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गयी। मध्यप्रदेश के प्रमुख सोयाबीन उत्पादक जिले छिन्दवाड़ा, नरसिंहपुर, सागर, इन्दौर, धार, उज्जैन, नीमच, रतलाम, देवास, शाजापुर, शिवपुरी, सीहोर, रायसेन, विदिशा, राजगढ़, होशंगाबाद, हरदा एवं बैतुल हैं जहां प्रदेश के कुल सोयाबीन उत्पादन का 94% उत्पादन होता है। धार प्रदेश का प्रमुख सोयाबीन उत्पादन करने वाला जिला है तथा वर्ष 2013–14 में धार का रकबा, उत्पादन एवं उत्पादकता क्रमशः 2.79 लाख हेक्टेयर, 4.13 लाख टन एवं 1483 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हुई परन्तु शाजापुर जिले की शुलाजपुर मण्डियों में सोयाबीन का अधिकतम आवक होने के कारण माडल कीमतों को एकत्रित करने तथा कीमतों का पूर्वानुमान के लिये शुलाजपुर मण्डी को चयनित किया गया। सोयाबीन मुख्य रूप से एक वर्षा आधरित फसल है एवं अधिकतर किसान सोयाबीन की बुवाई दक्षिण–पश्चिम मानसून आने के पश्चात् मध्य जून से मध्य जुलाई के बीच करते हैं तथा कटाई अक्टूबर माह में की जाती है तथा मण्डियों में अधिकतम आवक अक्टूबर से दिसम्बर के मध्य, मध्यम आवक जनवरी से मार्च माह तथा शेष महीनों में सोयाबीन का मण्डियों में आगमन लगभग न के बराबर होता है।

फसल की बुवाई एवं कटाई के पूर्व विभिन्न अर्थमिति तकनीकों के द्वारा कीमतों का पूर्वानुमान लगाने हेतु तथा प्राप्त कीमतों को कृषकों तक विभिन्न माध्यमों के द्वारा पहुॅचाने हेतु कृषि अर्थशास्त्र एवं प्रक्षेत्र प्रबंध विभाग, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय में बाजार असूचना (मार्केट इंटेलीजेंस) नामक परियोजना क्रियान्वित की जा रही है, जिससे कृषकों को अपनी फसल की अधिक से अधिक कीमत प्राप्त हो सके। जिससे कृषकों को बुवाई एवं कटाई अवधि में प्रमुख फसलों की पूर्वानुमानित कीमतों की जानकारी से अवगत कराया जा सके, जिससे कृषके फसलों के अन्तर्गत रकबा तथा कब उत्पाद को लाभदायक कीमत में बेचना है यह निर्णय ले सकते हैं।

वर्ष 2015–16 में भारत सरकार द्वारा सोयाबीन का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2600 रूपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है तथा विभिन्न अर्थमितिय तकनीकों के द्वारा अक्टूबर से जनवरी माह तक पूर्वानुमानित कीमत 3300–3400 रूपये प्रति क्विंटल प्राप्त हुई है। अतः कृषक उपरोक्त कीमतों को ध्यान में रखते हुये अपनी सुविधानुसार फसन को बेचने अथवा संग्रहित करने का निर्णय ले सकते है। पूर्वानुमान सामान्य मौसम की स्थिति, सरकार की निर्यात–आयात नीति आदि में परिवहन से प्रभावित हो सकता है।

जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक :
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक 135
दिनांक 30.10.2015

ज.ने. कृषि वि.वि. में
सरला सोनी होंगी सेवानिवृत्त

जबलपुर 30 अक्टूबर। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कृषि नगर प्राथमिक शाला से प्रधानाध्यापिका श्रीमति सरला सोनी 31 अक्टूबर 2015 को अपनी 34 वर्षीय सेवाओं के उपरान्त सेवानिवृत्त हो रही हैं।

—000—